G.P. - Psychology

B.A. I (H) - paper - I

Nature of Problem Solving

समस्या समाधान एक प्रमुख संज्ञानात्मक व्यवहार है। समस्या समाधान उस समय आवश्यक हो जाता है जब व्यक्ति किसी लक्ष्य पर पहुँचना चाहता है परन्तु लक्ष्य आसानी से उपलब्ध नहीं होता है। समस्या समाधान एक ऐसी परिस्थिति होती है जिसमें लक्ष्य तक पहुँचने में कुछ चीजें बाधा उत्पन्न करती हैं।

जब लक्ष्य आसानी से ~~उत्पन्न~~ उपलब्ध हो जाता है तो कोई समस्या नहीं उत्पन्न होती है और तब समस्या समाधान का प्रश्न ही नहीं उठता है। उदाहरणार्थ, कोई व्यक्ति लिखना चाहता है और उसके पास कलम नहीं है तो यहाँ व्यक्ति के लिए समस्या होगी। परन्तु यदि उसके पास कलम उपलब्ध है तो कोई समस्या नहीं होगी।

Witting & Williams III, (1984) के अनुसार - "समस्या समाधान का अर्थ होता है बाधाओं को दूर करने तथा लक्ष्यों की ओर पहुँचने के लिए चिन्तन प्रक्रियाओं का उपयोग करना।"

Baron (1992) के अनुसार, " समस्या समाधान में विभिन्न अनुक्रियाओं को करने या उनमें से चुनने का प्रयास सम्मिलित होता है ताकि वांछित लक्ष्यों की प्राप्ति की जा सके।"

इस प्रकार स्पष्ट है कि समस्या समाधान एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति समस्या के वर्तमान अवस्था से लक्ष्य अवस्था की ओर जाता है। समस्या से तात्पर्य एक ऐसी अवस्था से होती है जिसमें व्यक्ति कुछ चाहता है परन्तु वह आसानी से प्राप्त नहीं होता है।

Matlin (1983) ने समस्या समाधान के तीन महत्वपूर्ण पहलू बताया है :-

(1) मौलिक अवस्था (Original state) :- मौलिक अवस्था से तात्पर्य उस अवस्था से होता है जो समस्या के सामने आने पर प्रारंभ में उत्पन्न होती है।

(2) लक्ष्य अवस्था (Goal state) :- लक्ष्य अवस्था से तात्पर्य उस अवस्था से होता है जो लक्ष्य पर पहुँचने अर्थात समस्या समाधान होने के बाद उत्पन्न होती है।

(3) नियम (Rules) :- नियम से तात्पर्य उस कार्य-विधि से होता है जिसे व्यक्ति समस्या की मौलिक अवस्था से लक्ष्य अवस्था तक पहुँचने में अपनाता है।